RNI/MPHIN/2013/61414

ISSN 2278-0327
Peer Reviewed
Refereed Journal

UGC Care Listed

ज्योतिर्वेद - प्रस्थानम्

संस्कृत वाङ्मय की शोधपत्रिका - संस्कृत छात्रों की मार्गदर्शिका

दशम वर्ष, प्रथम अंक

मार्च -अप्रैल 2021

Bharatiya Jyotisham
भारतीय ज्योतिषम्

₹ 30

स्वच्छ भारत

दो गज की दूरी - मास्क है जरूरी

ISSN 2278 - 0327

RNI/MPHIN/2013/61414
UGC Care Listed

Bi - Monthly
Peer Reviewed
Refereed Journal

Bharatiya Jyotisham
पर्येति भावयन् लोकान्

ज्योतिर्वेद-प्रस्थानम्

संस्कृत वाङ्मय की शोधपत्रिका-संस्कृत छात्रों की मार्गदर्शिका

प्रधान सम्पादक

डॉ. पी.वी.बी. सुब्रह्मण्यम्

कार्यकारी सम्पादक

अविनाश उपाध्याय

सम्पादक

रोहित पचौरी

डॉ. रविन्द्र प्रसाद उनियाल

ज्ञान सहयोग

पिडपर्ति पूर्णय्या विज्ञान द्रष्ट चैत्रे

Jyotirveda-Prasthanam is printed & published by
Smt P V N B Srilakshmi
on behalf of
Bharatiya jyotisham
L-108, Sant Asharam Nagar Phase - 3, Laharpur, Bhopal - 462043
Editor - **ROHIT PACHORI***

विषय-सूची

क्र.	लेख विषय	लेखक	पृ.सं.
1.	गांधी जी के आत्मनिर्भरता के आदर्श की वर्तमान प्रासंगिकता	डॉ. सुभाष चन्द्र डबास 'चौधरी' डॉ. संजय कुमार	05
2.	प्रकृति कवि कालिदास के अभिज्ञानशाकुन्तल में परिस्थिति विज्ञान	डॉ. अक्षय कुमार मिश्र	09
3.	शतपथब्राह्मण में 'पुरुष' का स्वरूप- 'पुरुषो वै यज्ञः'	डॉ. रेनू कोछड़ शर्मा	14
4.	संस्कृत साहित्य में मानव के समग्र विकास में सहायक जीवन मूल्य	डॉ. मोना शर्मा	19
5.	श्री गुरु तेगबहादुर साहिब : सांस्कृतिक चेतना के आधार-स्तम्भ	डॉ. विनोद कुमार	22
6.	आयुर्वेदिक मानसिक स्वास्थ्य और त्रिगुण सिद्धान्त	डॉ. विजय कुमार मीना	25
7.	श्रीमद्भगवद्गीता का दार्शनिक चिन्तन	डॉ. सुमन कुमारी	28
8.	भाग्य परिशीलन	डॉ. अनिल कुमार	32
9.	भूमि परीक्षण की सरल विधियाँ	डॉ. भूपेन्द्र कुमार पाण्डेय	38
10.	वास्तुशास्त्र की मूल-संकल्पना एवं लोकोपकारक सिद्धान्त	डॉ. रविन्द्र प्रसाद उनियाल	41
11.	कला के क्षेत्र में ज्योतिषशास्त्र का योगदान	डॉ. नीरज कुमार जोशी डॉ. प्रभाकर पुरोहित	46
12.	हिन्दी कविता में नई सम्भावनाओं का द्वार खोलती कृति 'जुर्रत ख्वाब देखने की'	डॉ. संजय कुमार डॉ. सुभाष चन्द्र डबास 'चौधरी'	53
13.	पातंजल योगसूत्र का साधना मार्ग	डॉ. माधवी चंद्रा	57
14.	मुग्धबोध और अष्टाध्यायी के कृत् प्रत्ययों का अर्थ वैशिष्ट्य	ज्योति	60
15.	संस्कृत साहित्य में गुरु-शिष्य सम्बन्धोल्लेख	डॉ. विशाल भारद्वाज	64
16.	कौटिल्य की प्राचीन ग्रामीण शासन व्यवस्था एवं उसकी प्रासंगिकता	डॉ. हरेती लाल मीना	68
17.	संस्कृत के प्रमुख नाटकों में न्याय व्यवस्था	डॉ. जी. एल. पाटीदार डॉ. पुष्पेन्द्र कुमार सेवक	72
18.	आधुनिक परिप्रेक्ष्य में वास्तुशास्त्र की दृष्टि से वाटिकानिर्माण में वृक्षविचार	डॉ.मुकेश शर्मा	77
19.	संस्कृत साहित्यों में स्त्री-चिन्तन एवं उनकी भूमिका	डॉ. आशीष शुक्ला	81
20.	ज्योतिषशास्त्र की दृष्टि से मानसिक रोगों के नियन्त्रण पर मनोवैज्ञानिकों का चिन्तन	डॉ. कौशल किशोर बिजल्वाण	83
21.	श्री रामेश्वर दयालु विरचित शान्तामंगल नाटक में गुण विवेचन	डॉ. मनोज कुमार	85
22.	भारतीय भाषाओं के विकास में संस्कृत भाषा का योगदान	डॉ. लेखराम दत्राना	88
23.	काश्मीर शैवागमों के 'शिवसूत्रम्' में शिवस्वरूप की अवधारणा	डॉ. प्रदीप	91
24.	मालवांचल की बोली एवं उपबोलियों की विशेषताओं का समेकित विश्लेषण	डॉ. सुरेश कुमार बैरागी	96
25.	पं. बालकृष्ण भट्ट का साहित्य और हिन्दी नवजागरण	डॉ. अमित कुमार पाण्डेय डॉ. संजय कुमार	100

ISSN 2278 - 0327

कला के क्षेत्र में ज्योतिषशास्त्र का योगदान

डॉ. नीरज कुमार जोशी
मानविकी विद्याशाखा, संस्कृत विभाग
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी, उत्तराखण्ड
Email: joshi.neeraj87@gmail.com

डॉ. प्रभाकर पुरोहित
मानविकी विद्याशाखा, ज्योतिष विभाग
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी
Email: ppurohit@uou.ac.in

'कलाधीनं जगत्सर्वमिति' इस उक्ति के अनुसार समस्त जगत् विभिन्न कलाओं के अधीन है। वेदाङ्गों में ज्योतिष को वेद पुरुष का चक्षु कहा गया है। 'ज्योतिषं नयनं स्मृतम्' अर्थात् यह त्रैकालिक ज्ञान का प्रत्यक्ष दिव्य दर्शक है। फलतः भारतीय जीवन में ज्योतिषशास्त्र का विशिष्ट स्थान है। ज्योतिष का अर्थ ही चमकना, उजाला होना, प्रकाश करना, सजाना, सुभूषित करना है, यह अन्धकार से प्रकाश की, असत् से सत् की, अज्ञान से ज्ञानोन्मेष की विकास यात्रा को प्रदर्शित करता है। गणनामय यह शास्त्र एक-एक चरण नापते हुए सही ढंग से आगे बढ़ने में हमें प्रेरणा देता है। अस्तु, त्रिकालदर्शी ऋषियों ने साधना के उच्च शिखर पर अपनी अन्तर्दृष्टि के उजाले में यह अनुभव किया था कि ब्रह्माण्ड की समस्त गतिविधियाँ ईश्वरीय शक्ति की एक निश्चित नैतिक व्यवस्था के आधार पर चल रही है। इस व्यवस्था विधान को जानने के लिए जो सतत् चिन्तन एवं मनन किया गया उसी चिन्तन का परिणाम ज्योतिषशास्त्र है। प्राचीन काल से ज्योतिषशास्त्र का सम्बन्ध मानव, मानवीयसभ्यता तत्सम्बन्धी कला कौशलों से अभिन्न रूप में जुड़ा हुआ है। यदि एक सामान्य जीवन-चर्या का अध्ययन किया जाय तो, स्पष्ट होता है कि उसमें जीवन का हर एक पहलू कला से परिपूर्ण है। जीवन के दैनिक क्रिया कलापों के बीच उसकी पूजा-पाठ, उत्सव, पर्व, त्यौहार, शादी विवाह या अन्य घटनाओं से विविध कलाओं का घनिष्ठ सम्बन्ध है। वेद कलाकारों को ऋभु संज्ञा देता है और कहता है "शतक्रतवः सुकृतः सुहस्ताः" ऋभुओं के हाथ सुन्दर हैं, वे हमें शान्ति दें। ऋभु शिल्पी हैं और सुन्दर कला कृतियों को जन्म देने वाले हैं। जैसे सूर्य की किरणें अनेक प्रकार के पुष्पों को विकसित करती हुई भूमि को हरित दूर्वा के कोमल मखमली गद्दों से सुसज्जित कर देती हैं। खेतों को स्वर्ण कलियों से मण्डित कर देती है, वैसे ही कलाकार अपने हाथ की कला द्वारा असुन्दर को सुन्दर और कुरूप को सरूप बना देते हैं।

प्राचीन भारतीय ग्रन्थों में चौसठ कलाओं का उल्लेख मिलता है, जिनका ज्ञान प्रत्येक सुसंस्कृत नागरिक के लिए अनिवार्य समझा जाता था। इसलिए भर्तृहरि ने तो यहाँ तक कह दिया - *'साहित्यसङ्गीतकलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः'* अर्थात् साहित्य, संगीत और कला से विहीन व्यक्ति पशु के समान है। वास्तव में यदि भारतीय कला के क्षेत्र में ज्योतिषशास्त्रीय सिद्धान्तों का अध्ययन किया जाय तो यह दृष्टि गोचर होता है कि ज्योतिषीय ग्रह नक्षत्रों के द्वारा पड़ने वाले प्रभाव से व्यक्ति न केवल कला के क्षेत्र में रुचि लेता है, अपितु यह कला के अन्तर्गत आने वाले विभिन्न कौशलों में भी उत्कृष्ट योगदान देता है। ज्योतिषशास्त्र का यह सार्वभौमिक सिद्धान्त है ग्रह के प्रभाव के अनुरूप व्यक्तित्व निर्माण होता है ज्योतिषशास्त्र गणना के अनुसार अभी कलयुग के 5114 वर्ष व्यतीत हो चुके हैं।

ज्योतिषशास्त्रानुसार विभिन्न ग्रहों के प्रभाव विभिन्न एवं पृथ्वी पर रश्मियों के ग्रहों के प्रभाव अभिव्यक्त होता है। मानव उत्पत्ति के समय भिन्न-भिन्न रश्मि वाले ग्रहों की प्रधानता होती है, जातक का स्वभाव वैसा ही बन जाता है।-

एते ग्रहा बलिष्ठाः प्रसूति काले नृणां स्वमूर्तिसमम्।
कुर्युर्देहं नियतं बहवश्च समागता मिश्रम्॥

अतः स्पष्ट है कि संसार की प्रत्येक वस्तु आन्दोलित अवस्था में रहती है, और हर वस्तु पर ग्रहों का प्रभाव पड़ता रहता है। भारतीय ज्योतिर्विदों का अभिमत है कि मानव जिस नक्षत्र एवं वातावरण के उस प्रभाव विशेष में उत्पन्न एवं पोषित होता है, उसमें उसी तत्त्व की विशेषता रहती है। वैसे तो मानव जीवन में प्रत्येक ग्रह नक्षत्र का प्रभाव उसके जीवन पर पड़ता है परन्तु कुछ विशिष्ट नक्षत्र व ग्रहों के संयोग से उनका व्यक्ति कला के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यों का सम्पादन व रुचि लेने वाला होता है। ज्योतिषी मतानुसार शुक्र ग्रह को कला के अन्तर्गत आने विभिन्न कौशलों की देने का स्वामित्व प्राप्त होता है। क्योंकि वैदिक ज्योतिष में शुक्र को सुन्दरता की देवी भी कहा जाता है, इसी कारण से सुन्दरता, ऐश्वर्य तथा कला के साथ जुड़े अधिकतर क्षेत्रों का कारक शुक्र ही होते हैं, जैसे कि फैशन तथा इससे जुड़े लोग, सिनेमा जगत् तथा इससे जुड़े लोग, रंगमंच तथा इससे जुड़े लोग, चित्रकारी तथा चित्रकार, नृत्य कला तथा नाटककारिता लेखक तथा इससे जुड़े लोगों में शुक्र ग्रह की प्रधानता को देखा गया है। ज्योतिर्विदों द्वारा कहा भी गया है-

संगीत साहित्य कला कलाप प्रभव काव्य रीति गीत वाद्य।
कलह सौन्दर्य विशेष विधानादीन योतिष कवेः समाश्रयः॥

अर्थात् जिसे यजुर्वेद का स्वामित्व प्राप्त है न जो संगीत, साहित्य व भाँति-भाँति प्रकार की कलाएँ, गायन, वाद्य, सौन्दर्य आदि का निजी पास कोश है। ऐसे शुक्र ग्रह द्वारा उपरोक्त निरूपण किया जाता है। भारतीय कला अपनी प्राचीनता तथा विविधता के लिए प्राचीन काल से ही विख्यात रही है। भारत में इसके अनेक साक्ष्य प्रमाण हैं। पत्थर के टुकड़े को विभिन्न तकनीकों से विभिन्न प्रयोजनों के अनुरूप स्वरूप प्रदान किया जाता था जो न सिर्फ उपयोगिता की दृष्टि से ही महत्त्वपूर्ण थे, बल्कि उनका कलात्मक पक्ष भी आकर्षक है। जैसे-जैसे मनुष्य सभ्य होता गया उसकी जीवन शैली के साथ-साथ उसका कला पक्ष भी मजबूत होता गया। भारतीय इतिहास में प्रारम्भिक काल से ही कला की परिपक्वता का साक्षात् प्रमाण मिलते हैं। खुदाई में लगभग 1,000 केन्द्रों से प्राप्त इस सभ्यता के अवशेषों में अनेक ऐसे तथ्य सामने आये हैं, जिनको देखकर ही मन यह मानने को बाध्य हो जाता है कि हमारे पूर्वज सभ्यता के उच्च कोटि के कलाकार थे। ऐतिहासिक काल में भारतीय कला में और भी परिपक्वता आई मौर्य काल, कुषाण काल और फिर गुप्त काल में भारतीय कला निरन्तर प्रगति करती गई, अशोक के विभिन्न शिलालेख, स्तम्भलेख और स्तम्भ कलात्मक दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

कुषाण काल में विकसित गन्धार और मथुरा कलाओं को बेहद प्रसिद्ध है। प्राचीन भारतीय इतिहास में गुप्त काल सिर्फ राजनीतिक और आर्थिक दृष्टि से ही सम्पन्न न था। अपितु कलात्मक पक्ष से भी अत्यन्त सम्पन्न था। तभी तो उसे भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग कहा जाता है। इसी प्रकार मध्यकाल काल का सांस्कृतिक विकास में भी कला का महत्त्वपूर्ण योगदान है, दिल्ली सुल्तानों एवं स्थानीय शासकों ने ललित कलाओं, भवन निर्माण कला, शिक्षा साहित्य को प्रोत्साहित किया एवं इन्हें संरक्षण प्रदान किया। मुगल काल में मुगल साम्राज्य का सौन्दर्यात्मक आकार मध्य एशिया की [illegible] के साथ [illegible] मिले जुले रूप में पूर्ण होता हुआ था। [illegible] प्राकृतिक सौन्दर्य का प्रेमी था। उसका चित्रकला के क्षेत्र में अपना पूर्ण योगदान रहा हुमायूँ ने भी अपने साथ अपने पूर्वजों से ही चित्रकला की शिक्षा वंशानुक्रम एवं साहित्य के साथ-साथ चित्रकला को भी विशेष रूप से प्रोत्साहन दिया। इसी काल में शाहजहाँ का काल भारतीय इतिहास में स्वर्ण युग के नाम से जाना जाता है। [illegible] भवन निर्माण कला के क्षेत्र में ताज जैसे विश्व प्रसिद्ध इमारत के अतिरिक्त दिल्ली के किले आदि जैसी अन्य इमारतों को निर्माण करवाया में [illegible] का कारण था। मुगल साम्राज्य में बादशाह अकबर के बाद सर्वाधिक लोकप्रिय शासक शाहजहाँ ही था, जो जहाँगीर के पुत्र एवं के रूप में 5 जनवरी 1592 को पैदा हुआ था।

05-01-1592 ॥ शाहजहाँ ॥

ज्योतिषशास्त्रीय दृष्टि अनुसार देखे तो शाहजहाँ का जन्म कुम्भ लग्न में हुआ था, जन्म के समय उनकी कुण्डली में अति द्वादश तथा लग्न का स्वामी होकर राहु के साथ युति कर पंचम स्थान में स्थित शनि से बैठकर लाभ स्थान में बैठे पंचमेश बुध एवं भाग्येश शुक्र को मित्र दृष्टि से देख रहा है। द्वितीय स्थान में

की आत्म पर चतुर्थेश बुध, लग्नेश सूर्य तथा भाग्येश शुक्र की युति होने से उन्हें शाहजहाँ को सौन्दर्य प्रेमी, कलाप्रेमी बनाया वहीं उनकी महत्वकांक्षा ने वास्तुकला में रुचि रखने वाला बनाया सप्तम में सूर्य, शुक्र, बुध की लग्न स्थान में केतु के साथ युति द्वारा सप्तम भाव पर पूर्ण दृष्टि संबंध ने शाहजहाँ के प्रेम को अमर कर दिया और एक चटकान अकस्मात में डाल दिया, इसी ज्योतिषीय दृष्टि के संबंध ने शाहजहाँ को मुमताज की याद में ताजमहल के निर्माण की प्रेरणा प्रदान की थी।

भारतीय इतिहास में मुगल काल वास्तुकला का उत्कृष्ट नमूना है। जिसमें भारतीय और इस्लामी वास्तुकला के घटकों का अनोखा सम्मिलन है। आज भारत की वास्तुकला का उदाहरण 'ताजमहल' है जिसने विश्व की अपूर्व कला कृतियों के सात आश्चर्य में सम्मिलित स्थान पाया है। लालकिला, अक्षरधाम मन्दिर, कुतुबमीनार, अन्य प्रसिद्ध इसी भारतीय वास्तुकला के अनुपम उदाहरण रहे हैं, इस वास्तुकला की सहचरी मूर्तिकला व पाषाण कला है। जो प्रासाद, नगर, मंदिर, देवालय, मूर्तिनिर्माण, स्थापत्यकला, पर्यटन, लेखन आदि का भी प्रतिनिधित्व करती है। इसका क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। ज्योतिष व वास्तु में निकट का सम्बन्ध है। प्राचीन काल से ही वास्तु कला का उद्गम होता आया है वेदों में 'वास्तोष्पति' देवता और कुशल कारीगर के रूप में 'त्वष्टा' का उल्लेख मिलता है, वास्तुशास्त्र के प्रथम प्रवर्तक देवताओं के वास्तुविद् विश्वकर्मा है। ब्रह्मा ने संसार का प्राकार बनाने का समस्त भार पृथु को सौंपा था राजा पृथु के अनुरोध पर संसार के निर्माण हेतु ब्रह्मा ने विश्वकर्मा को नियुक्त किया था। जिन्होंने देवपुरियों का निर्माण किया था। पृथु ही अच्छे व्यवस्थापक और शासक था जो विभिन्न कलाओं का प्रेमी व वास्तुमर्मज्ञ भी था।

ज्योतिषशास्त्रानुसार वास्तु कला के क्षेत्र में कार्य करने वाले व्यक्ति के यदि जन्म कुण्डली, नवांश या चन्द्र लग्न से मंगल चतुर्थ स्थान में हो या चतुर्थेश मंगल की राशि में स्थित हो, मंगल चतुर्थ स्थान भाव या चतुर्थ पर दृष्टि हो अथवा चतुर्थेश के साथ युति हो, मंगल व बुध का पारस्परिक परिवर्तन योग हो, अर्थात् मंगल बुध की राशि में हो अथवा बुध मंगल की राशि में हो तो जातक न केवल वास्तुमर्मज्ञ होता है अपितु वह एक उच्च कोटी का वास्तुकार भी होता है।

इसी क्रम में कला अपनी प्रगति के दौर से आगे बढ़ रहा है, अगर आज बात करें आधुनिक काल की तो आधुनिक काल में आज बहुत तीव्र गति से भारतीय कला अपनी जड़ें फैला चुकी है प्रारम्भ में देश के प्रमुख तीन महानगरों कलकत्ता, बम्बई एवं दिल्ली में प्रारम्भ में यह आधुनिक काल का सूत्रपात हुआ। आधु... भारतीय चित्रकला जो कलाओं में श्रेष्ठ कला में ...

आधुनिक काल में चित्रकला में काफी उत्थान ... प्रमुख कलाकारों में स्व० गगनेन्द्र नाथ टैगोर, रवीन्द्रनाथ ... अमृता शेरगिल व यामिनी राय विशेष रूप से उल्लेखनीय है। ... भी साहित्यिक रूप में ख्याति प्राप्त रवीन्द्रनाथ टैगोर कला ... में भी अग्रगण्य हैं। गुरुदेव को आधुनिक काल का प्र... कलाकार माना जाता है।

आखिर उनको इतनी प्रसिद्धि देने वाला कौन सा ग्र... जिसके फलस्वरूप गुरुदेव को इतनी ख्याति प्राप्त हुई, ... ज्योतिषशास्त्रीय दृष्टि के अनुसार परम विद्वान् लेखक कवि ... भारत के प्रथम नोबल पुरस्कार विजेता श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर ... जन्म 7 मई 1861 को हुआ था।

07-05-1861 ।। रवीन्द्र नाथ टैगोर।। *

इनकी जन्म कुण्डली में बुद्धिमान होने का अनुपम योग गु... और चन्द्र के द्वारा बना, विद्या का कारक ग्रह चन्द्रमा और गुरु ... है। चन्द्रमा कल्पना तथा विचारों का स्वामी होता है तथा गुरु बुद्धि... का एकहृदय पक्ष का प्रतिनिधित्व करता है तो दूसरा बुद्धि पक्ष... का, इस प्रकार हृदय एवं बुद्धि के सुखद सम्मिश्रण ने इन्हें उच्च कोटि का कल्पनाशील अथवा चित्रकार बनाया तथा अपनी कला के द्वारा देश-विदेश में ख्याति अर्जित की है। महाकवि की कुण्डली का लग्न मीन है जिसका स्वामी गुरु, चन्द्र की राशि कर्क पर स्थित है तथा चन्द्रमा बृहस्पति की राशि मीन पर स्थित है। इसके साथ ही पंचम भाव में बैठकर गुरु अपनी पूर्ण नवम दृष्टि से चन्द्रमा को देख रहे है अतः सरस्वती योग बना जिसके फलस्वरूप ही गुरुदेव कल्पनाशील व कलाप्रेमी बने।

इसी क्रम में कला जब संगीत से जुड़ती है तो यह जीवन को एक नवीन पथ पर एक अलौकिक आनन्द की प्राप्ति कराती है। क्योंकि जीवन ऊर्जा का एक महासागर है। जब अंतश्चेतना जागृत होती है तो ऊर्जा जीवन की कला के रूप में उभरती है। कला जीवन को 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' में समन्वित करती है इसके द्वारा बुद्धि आत्मा का सत्य स्वरूप झलकता है। कला उस क्षितिज की भाँति है जिसका कोई छोर नहीं। इतनी विशाल विस्तृत अनेक विधाओं को अपने में समेटे मनोरंजन, सौन्दर्य, प्रवाह, उल्लास न जाने कितने तत्वों से भरपूर है जिसमें मानवीयता को सम्मोहित करने की शक्ति है। जब यह कला संगीत के रूप में उभरती है तो कलाकार गायन और वादन से स्वयं को ही नहीं श्रोताओं को भी अभिभूत कर देती है।

यदि ज्योतिषीय दृष्टि से देखा जाय तो संगीत में ज्योतिषीय ग्रहों का ही प्रभाव होता है जो व्यक्ति को सुन्दर कण्ठ व इस क्षेत्र में प्रसिद्धि देता है। इसे कुछ इस प्रकार समझते हैं।

भगवान विष्णु के साक्षात् अवतार और महाभारत महाकाव्य के महानायक श्री कृष्ण का जन्म भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को अर्द्ध रात्रि के समय रोहिणी नक्षत्र में हुआ था।

।। भगवान् श्रीकृष्ण ।। *

भगवान् श्री कृष्ण की जन्म कुण्डली में पंचम भाव (जो कला व संगीत का होता है) उसमें स्थित उच्च के बुध ने जहाँ उन्हें वेणुवादन में दक्ष बनाया वहीं लाभेश मंगल लग्न में स्थित उच्च के चन्द्र तथा स्वराशी शुक्र ने श्रीकृष्ण को गोपीगण मोहित रसिक, कलाप्रिय तथा सौन्दर्य उपासक बनाया, इस प्रकार भगवान् श्री कृष्ण की जन्म कुण्डली का ज्योतिषीय अंकन करने से पता चलता है कि उनको महान वेणुवादक व कलाप्रेमी बनाने में पंचमेश बुध व स्वराशी शुक्र का ही योगदान था।

इसी प्रकार आधुनिक समय में भारतीय शास्त्रीय संगीत को दुनिया के कोने में पहुँचाने वाले मशहूर सितार वादक व संगीतज्ञ पंडित रविशंकर का जन्म काशी विश्वनाथ की नगरी वाराणसी में 7 अप्रैल 1920 को मीन लग्न में हुआ था।

07-04-1920 ।। पंडित रविशंकर।।*

इनकी कुण्डली में लग्नेश उच्च का होकर पंचमस्थ मूल त्रिकोण में बैठकर लग्न और भाग्य स्थान पर पूर्ण दृष्टिगत है। साथ ही पंचमस्थ बृहस्पति पूर्वजन्म में अर्जित और संचित पुण्य कर्मों का प्रदर्शन करते हुए इन्हें एक आध्यात्मिक जातकत्व और कलाप्रेमी बना रहा है। क्योंकि जन्म कुण्डली में पंचम स्थान कला और संगीत आदि विद्याओं का होता है तथा यहां पर बैठा हुआ सात्विक ग्रह बृहस्पति उच्च का होने से इनका संगीत के क्षेत्र में अद्वितीय सफलता प्रदान कर रहा है। इस पंचमस्थ ग्रह के प्रभाव से ही पं० रविशंकर को देश का सर्वोच्च सम्मान ''भारतरत्न'' भी प्राप्त हुआ और दुनिया भर में इन्होंने संगीत के माध्यम से अपारलोकप्रियता भी हासिल की है। वहीं द्वादश भाव में स्थित उच्चाभिलाषी शुक्र, बुध की युति ने कला और संगीत के क्षेत्र में इनकी ख्याति सात समुद्रपारीय देशों तक पहुंचाई और इन्हें सुविख्यात संगीतकार बनाने में राजयोग समान फल प्रदान किया। वहीं शुक्र के प्रभाव कारणवशात् ही उनकी दोनों बेटियां अनुष्का शंकर सितार वादन में और नोराह जोन्स शीर्षस्थ गायिका के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त किये हुए है।

इसी प्रकार सुरकोकिला लता मंगेशकर के जीवन में यदि ज्योतिषीय ग्रह दृष्टि डाले तो यहाँ भी ज्योतिष का ही प्रभाव दिखता है जिसके फलस्वरूप उन्हें संगीत में इतनी अपार सफलता प्राप्त हुई। इनका जन्म 28 सितम्बर 1921 को सुबह 10:30 बजे इंदौर मध्यप्रदेश में वृश्चिक लग्न में हुआ था।

28-09-1921 ।। लता मंगेशकर।।*

जन्म के समय जन्म कुण्डली में भाग्येश त्रिकोणगत होकर बलवान् होने से लता जी को अपने क्षेत्र विशेष में शोहरत और सफलता की बुलंदियाँ हासिल हुईं। साथ ही पंचमेश बृहस्पति केन्द्र में तथा फिल्म व संगीत का कारक एक ग्रह शुक्र एकादश स्थान में बैठकर इनको अभिनय व संगीत के क्षेत्र में सफलता प्रदान कर रहा है।

इसी प्रकार कला यदि अभिनय के क्षेत्र से जुड़ जाय तो व्यक्ति को उच्च कोटि का कलाकार, जननायक बना देती है। इसे कुछ यूं समझते है। ''बिग'' बी के नाम से प्रसिद्ध हिन्दी फिल्मों के प्रथम ''एंग्रीयंग मैन'' अमिताभ बच्चन जिनका जन्म 11 अक्टूबर 1942 को इलाहाबाद में सुप्रसिद्ध कवि हरिवंशराय बच्चन के घर में कुम्भ लग्न में हुआ था।

11-10-1942 ।। अमिताभ बच्चन।।*

इनकी जन्म कुण्डली में फिल्म लाइन से संबंधित पंचम स्थान का स्वामी बुध उच्च का तथा फिल्म (अभिनय) का कारक ग्रह अमिताभ को सुप्रसिद्ध एवं महान फिल्म अभिनेता के रूप में लोकप्रियता दिला रहा है।

ज्योतिषशास्त्रीय ग्रन्थों में कुछ विशिष्ट नक्षत्रों में उत्पन्न होने वाले जातक कला के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यों में योगदान करते हैं। जो इस प्रकार से हैं-

- कृत्तिका- इस नक्षत्र में उत्पन्न जातक शिल्पकला, चित्रकला, फोटोग्राफी के क्षेत्र में रुचि।
- रोहणी- संगीत, सौन्दर्यप्रेमी, कला, साहित्य, नाट्यकला लेखनादि कार्यों में विशेष रुचि।
- मृगशिरा- दूरदर्शन एवं फिल्म उद्योग, संगीत कलादि से संबंध रखने वाला।
- आर्द्रा- चित्रकलादि में रुचि।
- पुनर्वसु- सुन्दरकलाओं का शौकिन, पत्रकारिता, सम्पादक, प्रकाशन में रुचि।
- अश्लेषा- दूसरों की अनुकृति करने वाला, कलात्मक अभिरुचियों व नेतृत्व कौशल, पेन्टिंग में रुचि।
- पूर्वाफाल्गुनी- अनेक कलाओं में कुशल, अनुभवी एवं
- हस्त- कुशल कारीगर।
- चित्रा- सुन्दर लेखन कला, प्रकृति प्रेमी, फैशन, तकनीकी और कलात्मक दोनों प्रकार के कार्यों में कुशल।
- स्वाती- पर्यटन के क्षेत्र में रुचि।
- विशाखा- पेज सम्पादक, प्रकाशक।
- रेवती- दर्जी, प्रकाशक, नेतृत्वकला में कुशल।

ज्योतिषशास्त्रानुसार कुछ विशेष राशियों में उत्पन्न होने वाले जातकों का कला के क्षेत्र में योगदान-

- वृष- इस राशि में उत्पन्न जातक वास्तु कला का जानने वाला, इंजीनियर उत्तम कोटि का कारीगर होता है।
- मिथुन- इस राशि में उत्पन्न जातक सुन्दर लेख लिखने वाला गायन, वादन

  सत्कवि: शिल्पकलाप्रभव:चित्रलिपिज्ञ: प्रसन्नचित्त:।*
- कर्क- इस राशि में उत्पन्न जातक सुन्दर एवं आकर्षण मुखाकृति वाला प्राकृतिक सौन्दर्य में रुचि, कला-संगीत व साहित्य में विशेष रुचि रखने वाला होता है।
- कन्या- इस राशि में उत्पन्न जातक, सुन्दर वाक्यों को बोलने वाला कल्पनाशील, लेखक-गणित, संगीत, कला का प्रेमी व चित्रकला सुलेख लिखने वाला।

  स्त्रीप्रसक्त: कामशीलप्रसन्न: स्वभावसंज्ञ: सुदृष्टि:।
  सत्यवाक्: सत्यरत: कलासु निपुण: शास्त्रार्थसिद्धान्तविद्।।*
- तुला- इस राशि में उत्पन्न जातक नाट्यकला, चित्रकला व अभिनय के क्षेत्र में रुचि रखने वाला होता है।
- वृश्चिक- इस राशि में उत्पन्न जातक वास्तुशास्त्र में रुचि, पर्यटन, प्रकृति सौन्दर्य में रुचि रखने वाला होता है।
- मीन- इस राशि में उत्पन्न जातक, कलाकार, चित्रकार व काव्यकला का प्रेमी होता है।

ज्योतिषशास्त्रानुसार जन्म कुण्डली के पंचम भाव जो कला व संगीत का होता इस भाव से संबंध रखने वाले ग्रह व राशियों के कुछ विशिष्ट योग व इस स्थान में बैठे ग्रहों की दृष्टि व उन पर पड़ने वाली दृष्टि द्वारा बनने वाले ग्रह संयोगों के माध्यम से जातक कला व तत्संबंधित क्षेत्रों में रुचि लेने वाला होता है।

सामान्यत: वैदिक ग्रंथों के अनुसार सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि इन सातों ग्रहों का अपना अलग-अलग क्षेत्र और प्रभाव है। जन्म कुण्डली के मुताबिक ग्रह ही कुण्डली के

रीमिडेटर होते है, यानी जो भी होगा उन ग्रहों की देखरेख में होता है। जैसे- मंगल, सूर्य, शनि और शुक्र केरियर की दशा तय करते है। उनमें भी शुक्र ग्रह कला संगीत, साहित्य आदि क्षेत्रों के कारक माने गये हैं। बुध और गुरु उस क्षेत्र की बुद्धि और शिक्षा प्रदान करते हैं। यद्यपि क्षेत्र इनका भी निश्चित है, लेकिन इन पर जिम्मेदारियां ज्यादा रहती हैं। इसलिए कुण्डली में इनकी शक्ति महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

कला के क्षेत्र में कुछ अनुभूत ज्योतिषीय योग जो व्यक्ति को कला क्षेत्र से संबंधित कार्यों में रुचि लेने वाला व इस क्षेत्र से संबंधी कार्यों में विशिष्ट सहयोग प्रदान करवाता है।

- यदि शुक्र केन्द्र, पंचम में हो तो जातक कलाकार होता है। यदि शुक्र कारक हो, उच्च का हो अथवा स्वग्रही हो तो वह अच्छा फल देता है।
- सूर्य शुक्र का संबंध या योग जातक को नृत्यकला आदि में निपुण बनाता है।
- पञ्चमेश शुक्र उच्च का केन्द्र में या त्रिकोण में स्थित हो तो जातक विभिन्न कलाओं में रुचि लेने वाला होता है।
- कुण्डली में शुक्र, शनि का संबंध होने पर जातक शिल्प कला को जानने वाला होता है।
- पंचम भाव में गुरु हो तो जातक अनेक विद्याओं को जानने वाला होता है।
- पञ्चमेश शुभग्रह हो व शुक्र से संयोग रखता हो तो वह जातक साहित्य, संगीत में रुचि रखता है।
- पंचम भाव स्वग्रही हो तो या उच्च का हो और शुक्र अपने घर का हो तो जातक संगीत में रुचि रखता है।
- पंचम स्थान शुभ ग्रह युक्त हो और गुरु द्वारा दृष्ट हो तो जातक वेणुवादन में प्रविण होता है।
- जन्म कुण्डली में सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु का योग जातक को शिल्पकार, चित्रकार व सुन्दर स्वरूप वाला बनता है।
- जिसकी कुण्डली में शुक्र उच्च (मीन) राशि का हो तो मनुष्य गान विद्या में निपुण, कवियों में श्रेष्ठ कला प्रेमी होता है।
- जिसकी कुण्डली में पञ्चमेश गुरु केन्द्र में हो व शुक्र दशम स्थान में स्थित हो तो जातक फिल्मी दुनिया व संगीत का प्रेमी होता है।
- जन्मकुण्डली में सूर्य, शुक्र, केतु, बुध का सम्बन्ध हो व शनि द्वारा भी हो तो जातक वास्तुकला को जानने वाला होता है ।

अतः उपरोक्त कथित योगों व दृष्टान्तों द्वारा यह पुष्टि है कि ज्योतिषशास्त्रीय सिद्धान्तों के अनुसार कला के अप्रतिम योगदान करने वाले व्यक्तियों की ग्रह स्थिति रही जिसके फलस्वरूप ही इन ग्रह नक्षत्रों के माध्यम से कला व तत्संबंधित क्षेत्रों में रुचि लेता है।

सन्दर्भसूची -

1. नीतिशतक, श्लोक 12
2. भावकुतूहल, जीवननाथ
3. मानसागरी
4. ज्योतिष योग चन्द्रिका
5. भाग्यवानों की कुण्डलियां
6. भाग्यवानों की कुण्डलियां
7. भाग्यवानों की कुण्डलियां
8. भाग्यवानों की कुण्डलियां
9. मानसागरी
10. वृहज्जातक
11. मानसागरी
12. मानसागरी
13. मानसागरी

सन्दर्भसूची-

1. भारतीय ज्योतिष-भारतीय ज्ञान पीठ प्रकाशन
2. नीतिशतकम्-भर्तृहरि
3. भावकुतूहलम्-चौखम्बा सुभारती प्रकाशन/जीवननाथ
4. वृहत्जातकम्-मोतीलाल बनारसी दास चौक वाराण वराहमिहिर
5. मानसागरी-चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
6. भारत का इतिहास-साहित्य भवन/डॉ एस.आर.वर्मा
7. भारतीय चित्र कला की परम्परा-भारतीय कला प्रका
8. सारावली- मोतीलाल बनारसी दास जवाहर नगर दिल्ली कल्याण वर्मा
9. ज्योतिष रत्नाकर- मोतीलाल बनारसी दास जवाहर दिल्ली/देवकीनन्दन सिंह
10. वैदिक साहित्य और संस्कृति-न्यू भारतीय बुक कॉर्पो दिल्ली /डॉ. किरण कुमारी
11. ज्योतिष योग चन्द्रिका-आनंद पेपरबैक्स